पुरुषोत्तम नागेश ओक

ताजमहल हिन्दू राज-भवन था

Scanned by CamScanner

पास का दृश्य.....

ताज महल के शिखर पर कलश और त्रिशूल

शिव जी का प्रतीक

प्रस्तुति- निगमेंद्र सिसोदिया

यह सनातन धर्म का प्रतीक है।

कोई भी इसे इस्लाम का प्रतीक सिद्ध नही कर सकता।

Scanned by CamScanner

वैदिक ज्यामिती विधि से निर्मित छत.....

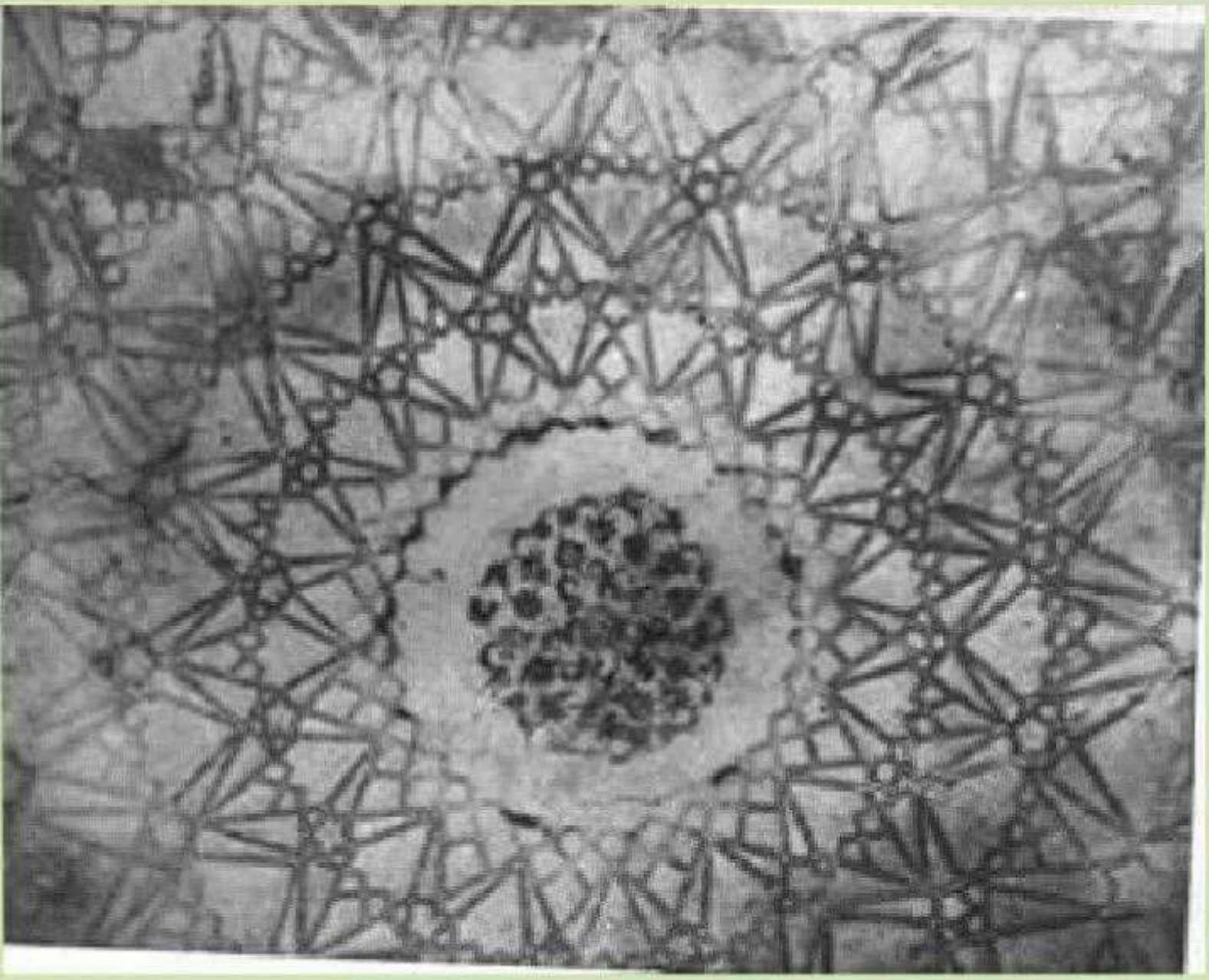

यह वैदिक ज्यामिति रुपरेखा का चित्र अनेको प्राचीन निर्माणों में देखने को मिलता है

Scanned by CamScanner

ताज महल के
निचले तल पर स्थित संगमरमरी कमरों का समूह.....
ये राजा के महल के होने का प्रमाण है

प्रस्तुति- निगमेंद्र सिसोदिया

इतने विशाल कमरे क्या मुर्दों के लिए कोई बनाता है ?
जब मकबरे में किसी को रहना नही था तो कोई कमरे क्यों बनाएगा?

Scanned by CamScanner

आतंरिक पानी का कुंवा.....

ताज महल -मकबरे के लिए कुंआ कभी नही बना करता है।

प्रस्तुति- निगमेंद्र सिसोदिया

कुंआ बनाने का मतलब महल में रहने वालों के लिए जल प्रबंध

Scanned by CamScanner

ताज महल का चित्र

दीवारों पर बने हुए फूल.....जिनमे छुपा हुआ है ओम् (ॐ) ....

कोई मुस्लिम निर्माणकर्ता ॐ के चिह्न को कभी नही बनाता।

क्या दुनिया अन्धी है जो ये सच नही दिखता किसी को।

Scanned by CamScanner

ताजमहल और गुम्बद के सामने का दृश्य

दुनिया में किसी भी मुस्लिम इमारत को महल नही कहा जाता है।

प्रस्तुति- निगमेंद्र सिसोदिया | वैसे भी 'महल' हिंदी शब्द है।

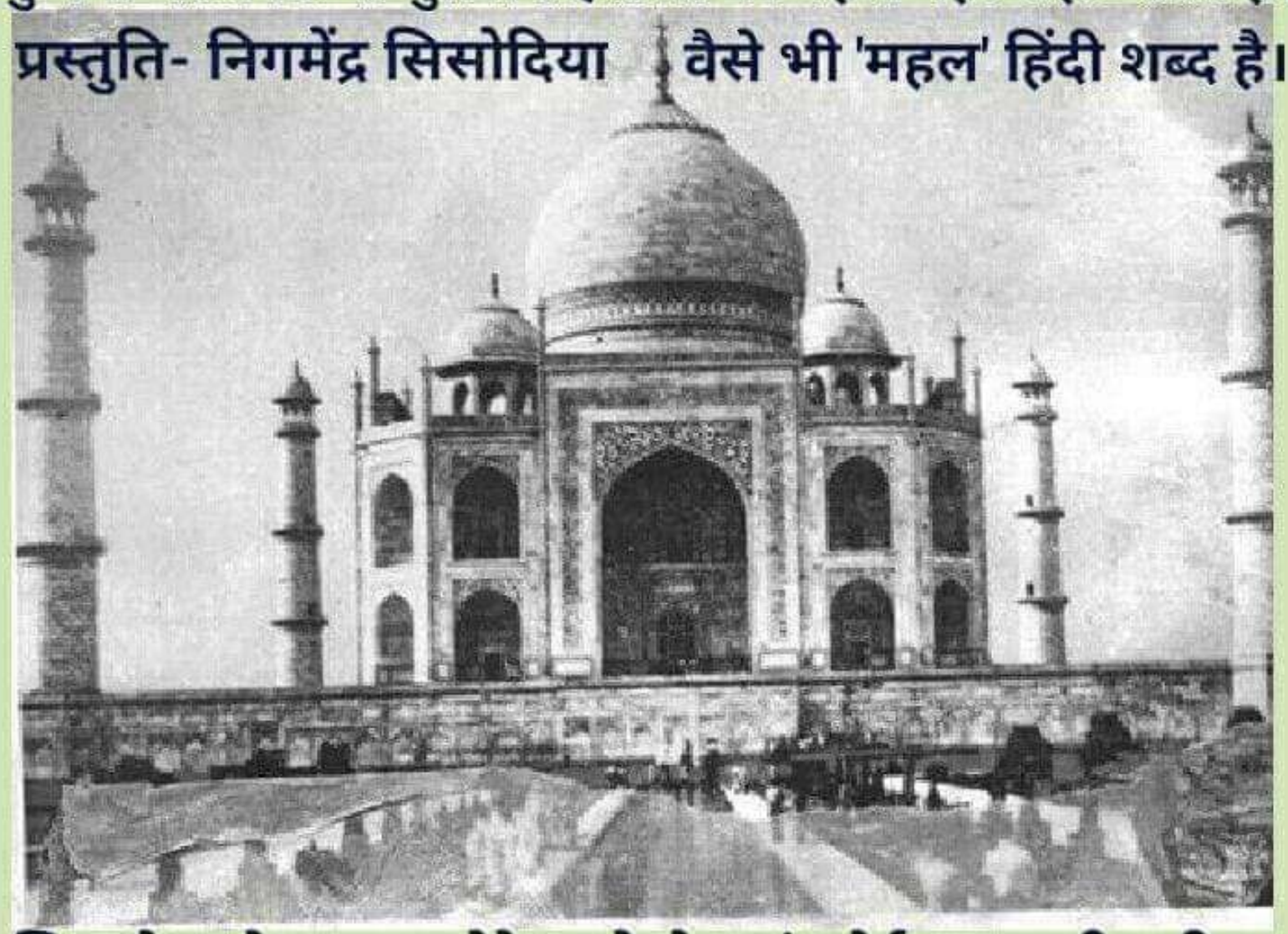

जिस देश से मुग़ल लुटेरे आये थे वहां कोई महल भी नही था तो उन्हें महल बनाने की तकनीक क्या मालूम होगी।

Scanned by CamScanner

पुरुषोत्तम नागेश ओक की खोज से डरकर इंदिरा गाँधी द्वारा बहुत से साक्ष्यों को छुपाने के लिए,गुप्त ईंटों से बंद किया गया दरवाजा.....

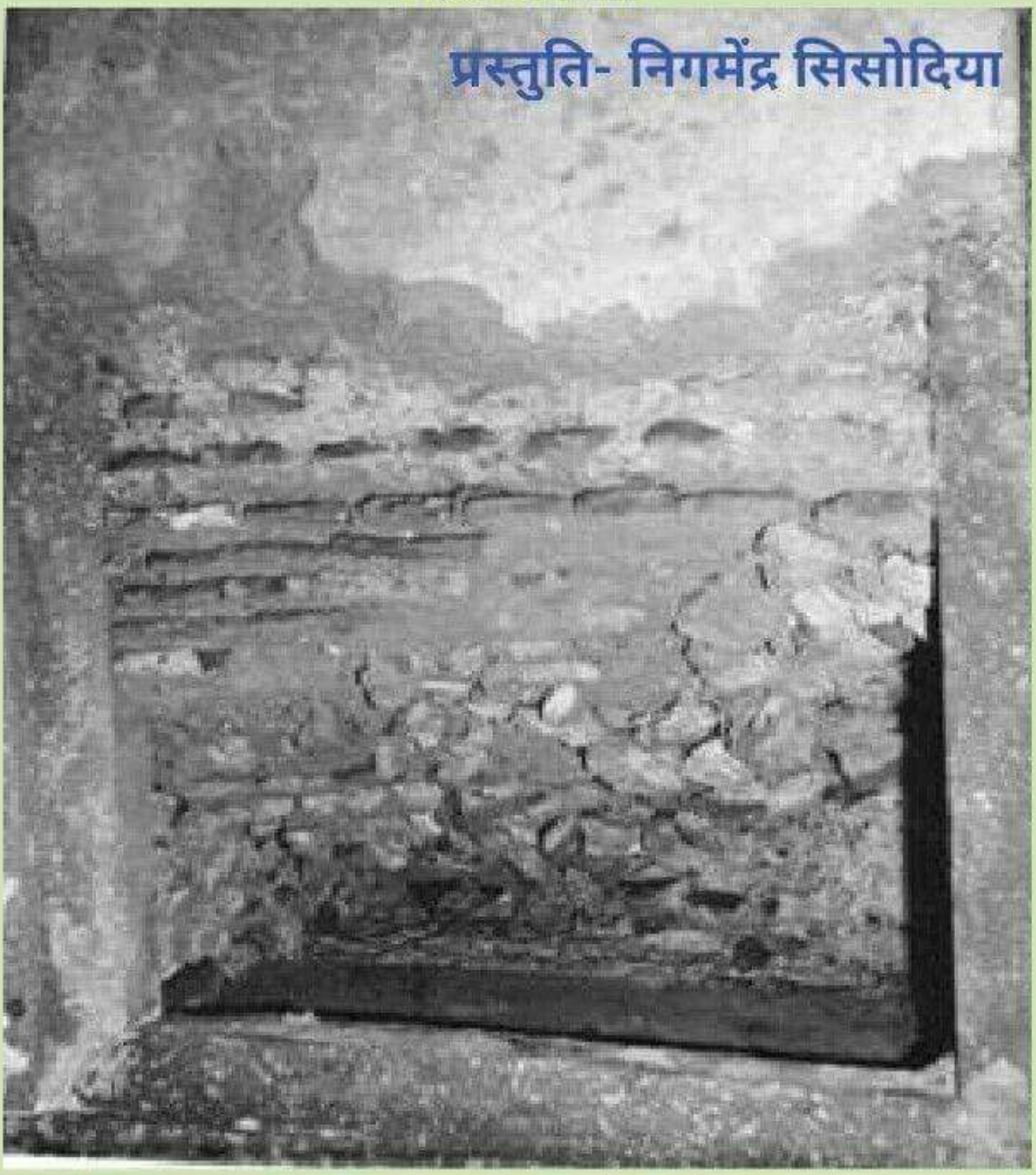

कोई पूछे कि मकबरे में ये गुप्त कमरे बनाने का मकसद क्या होता है ?

Scanned by CamScanner

ताज के अंदर

दरवाजों में लगी गुप्त दीवार,जिससे अन्य कमरों का सम्पर्क था.....

सच छिपाने के लिए सब रास्ते बंद कराना ही शंका पैदा करता है

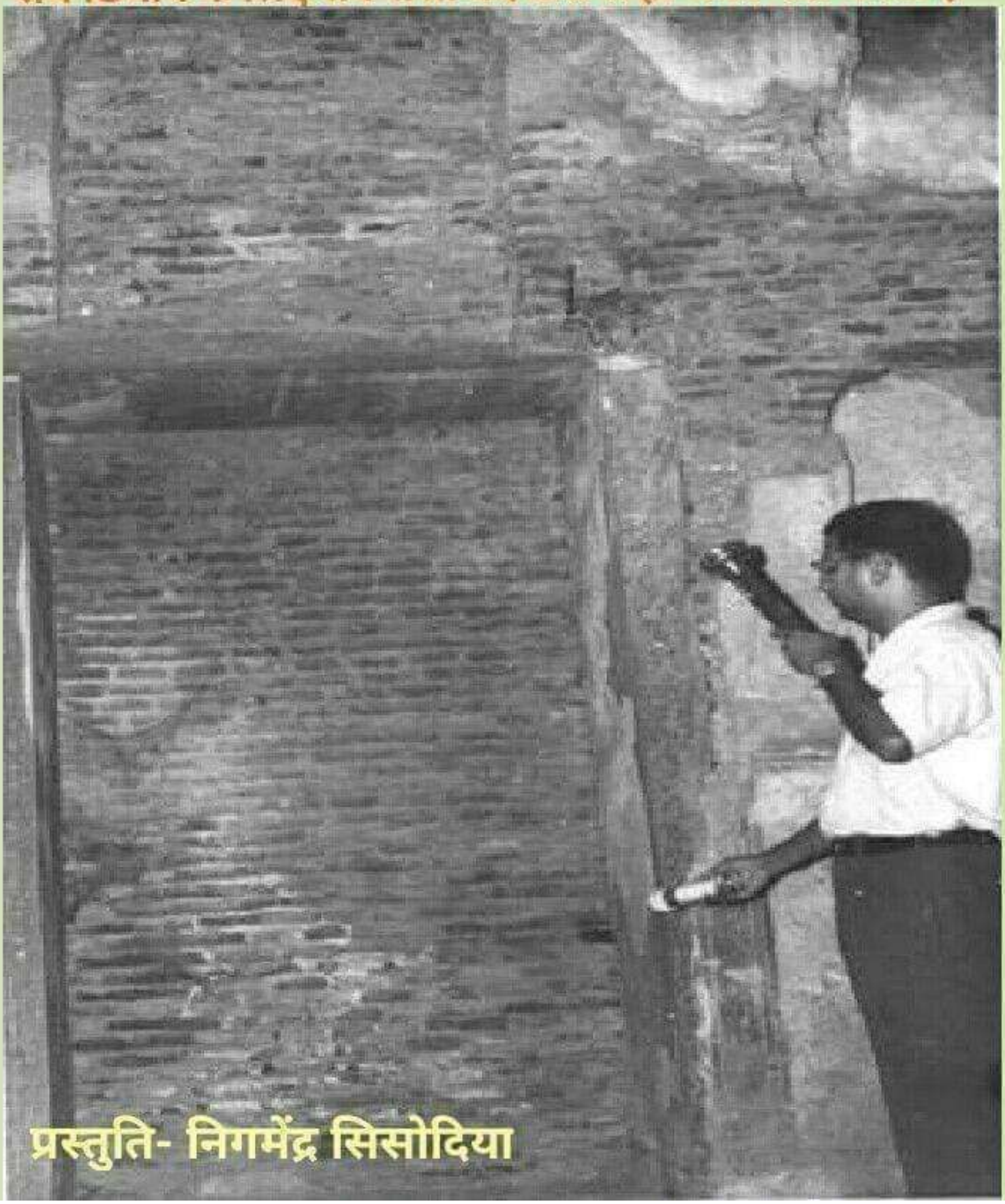

प्रस्तुति- निगमेंद्र सिसोदिया

Scanned by CamScanner

प्रवेश द्वार पर बने लाल कमल.....
कोई मुस्लिम सनातन धर्म प्रतीक कमल फूल को नही बनाता
ताज महल चित्र

प्रस्तुति- निगमेंद्र सिसोदिया

..

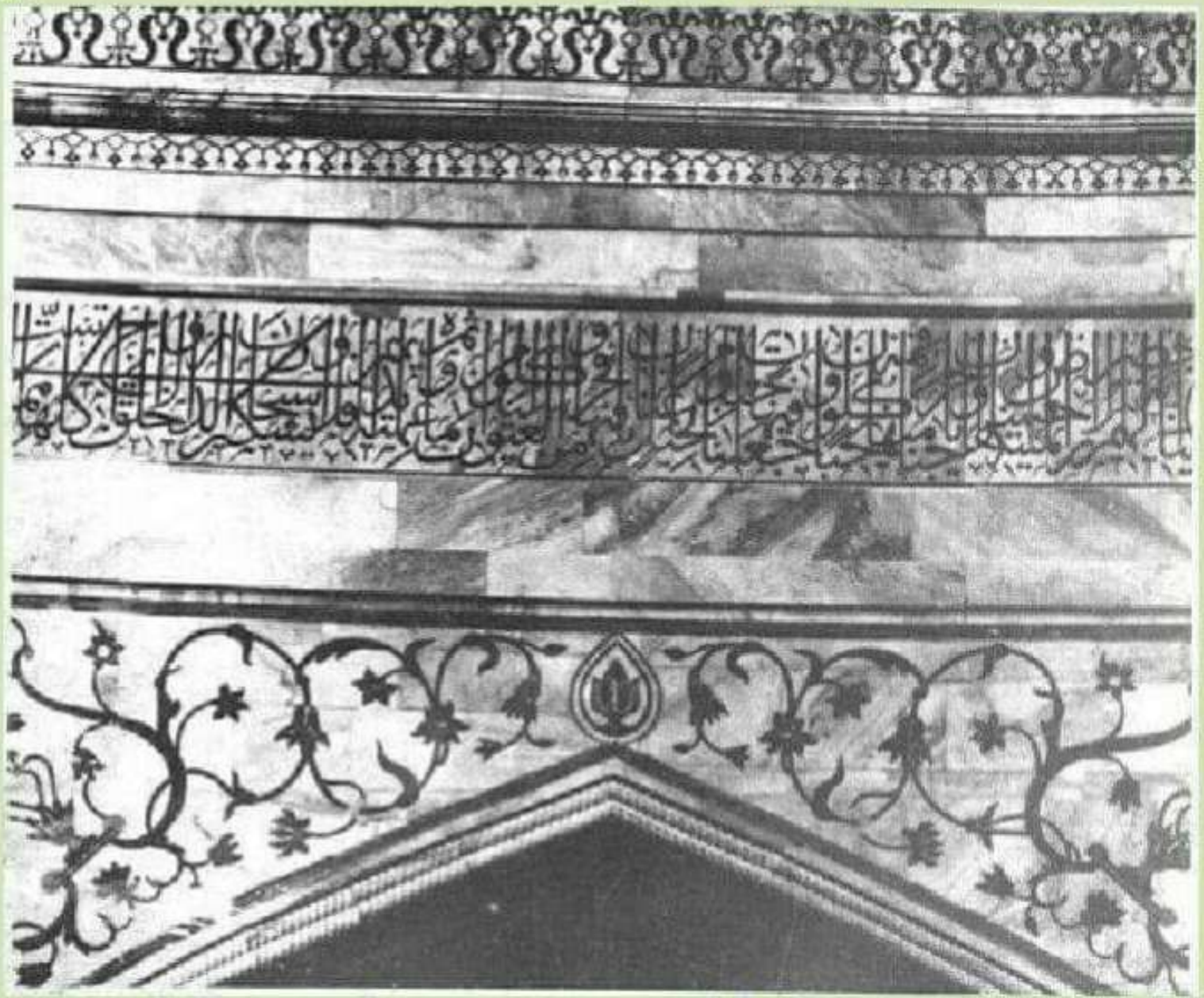

सब जानते हैं कमल के फूल सनातन धर्म के लिए क्या स्थान रखते हैं

Scanned by CamScanner

विशेषत: वैदिक शैली मे निर्मित गलियारा.....
ताज महल का दृष्य

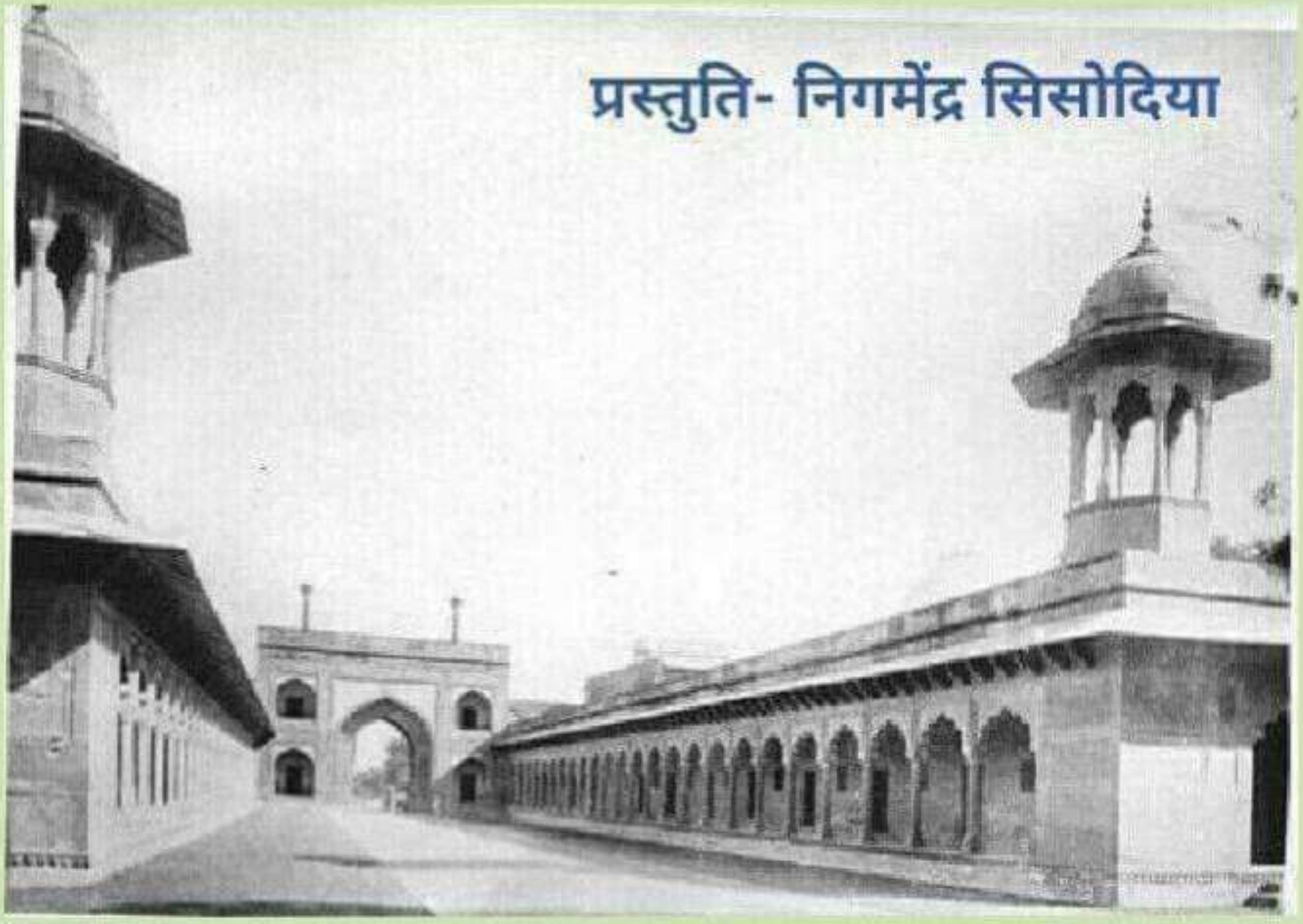

मकबरे के लिए सनातन वैदिक रीति से गलियारा बनाने का उद्देश्य नही होता

Scanned by CamScanner

पीछे की खिड़कियाँ और बंद दरवाजों का दृश्य.....
ताज महल के पीछे का चित्र
कब्र में इनका कोई काम नहीं होता

7

इतने विशाल खिड़की और दरवाजे किसी राज महल के कमरों के लिए बनते हैं

Scanned by CamScanner

अब कृपया इसे पढ़ें .....

प्रो.पी. एन. ओक. को छोड़ कर किसी ने कभी भी इस कथन को चुनौती नही दी कि.....

"ताजमहल शाहजहाँ ने बनवाया था"

प्रो.ओक. अपनी पुस्तक *"TAJ MAHAL - THE TRUE STORY"* द्वारा इस बात में विश्वास रखते हैं कि,--

सारा विश्व इस धोखे में है कि खूबसूरत इमारत ताजमहल को मुग़ल बादशाह शाहजहाँ ने बनवाया था.....

पृ.सं.-1

ओक कहते हैं कि.....

ताजमहल प्रारम्भ से ही बेगम मुमताज का मकबरा न होकर,एक हिंदू प्राचीन शिव मन्दिर है जिसे तब तेजो महालय कहा जाता था.

अपने अनुसंधान के दौरान ओक ने खोजा कि इस शिव मन्दिर को शाहजहाँ ने जयपुर के महाराज जयसिंह से अवैध तरीके से छीन लिया था और इस पर अपना कब्ज़ा कर लिया था,,

Scanned by CamScanner

पी.एन. ओक के जीते जी कोई उनके तथ्यों और प्रमाणों को चुनौती देने नही आया, जबकि ओक ने सबको चुनौती दी थी।

बादशाह नामा के अनुसार,, इस स्थान पर मुमताज को दफनाया गया.....

जिन भ्रष्ट इतिहासकारों ने सच छिपाया,उन्ही का इतिहास छात्रों को पढ़ाया जाता है

Scanned by CamScanner

मकबरे के पास संगीतालय.....एक विरोधाभास.....
दुनिया में कब्र के पास संगीत बजाने का औचित्य नही होता
तेजो महालय

प्रस्तुति- निगमेंद्र सिसोदिया

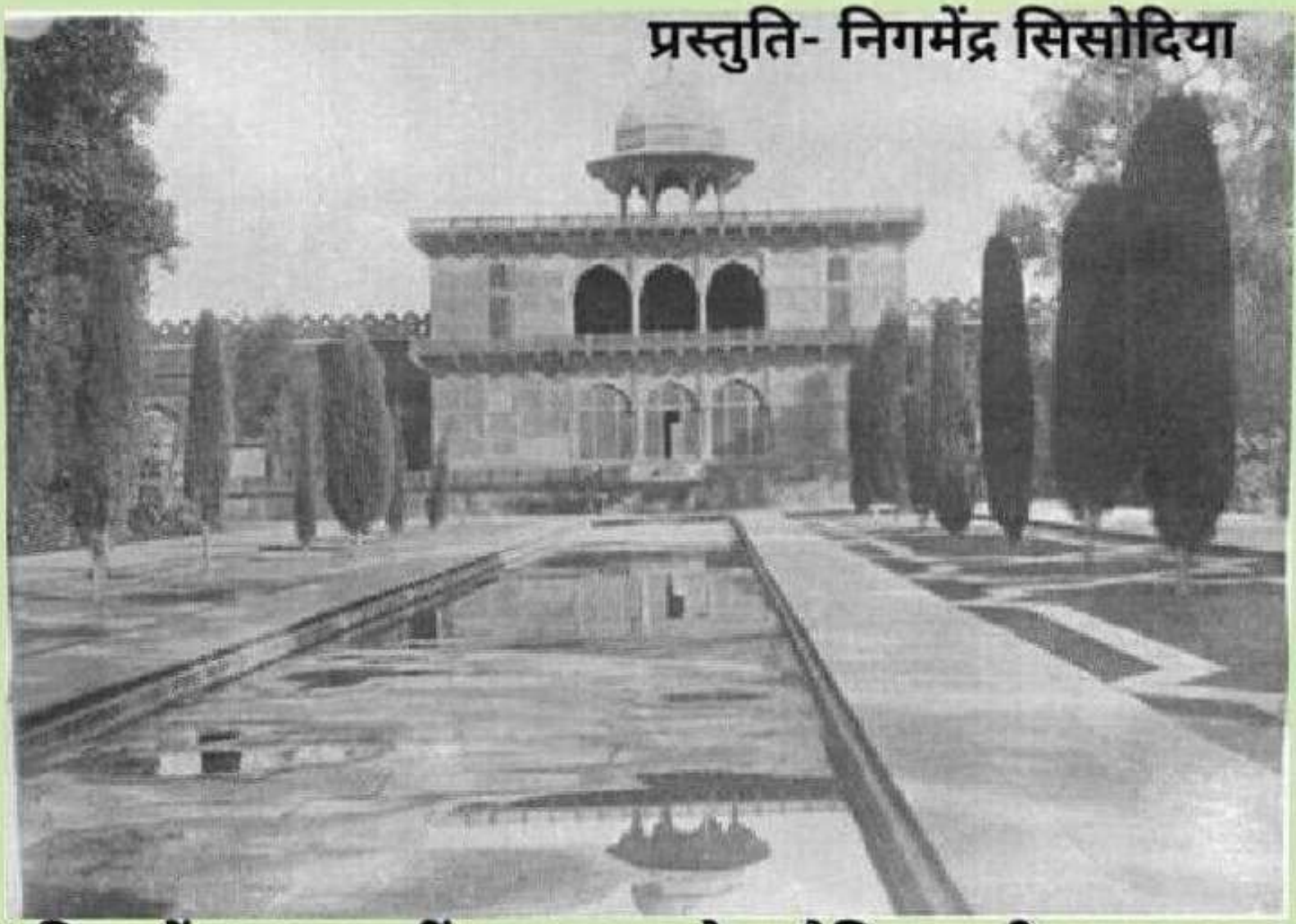

दुनिया में इसका कहीं उदाहरण और औचित्य नही बता सकता कि मकबरे के लिए भला कोई संगीतालय किसलिए बनाएगा ?

Scanned by CamScanner

==>न्यूयार्क के पुरातत्वविद प्रो. मर्विन मिलर ने ताज के यमुना की तरफ़ के दरवाजे की लकड़ी की कार्बन डेटिंग के आधार पर 1985 में यह सिद्ध किया कि यह दरवाजा सन् 1359 के आसपास अर्थात् शाहजहाँ के काल से लगभग 300 वर्ष पुराना है...

==>मुमताज कि मृत्यु जिस वर्ष (1631) में हुई थी उसी वर्ष के अंग्रेज भ्रमण कर्ता पीटर मुंडी का लेख भी इसका समर्थन करता है कि ताजमहल मुग़ल बादशाह के पहले का एक अति महत्वपूर्ण भवन था.....

पृ.सं.-5

==>यूरोपियन यात्री जॉन अल्बर्ट मैनडेल्स्लो ने सन् 1638 (मुमताज कि मृत्यु के 07 साल बाद) में आगरा भ्रमण किया और इस शहर के सम्पूर्ण जीवन वृत्तांत का वर्णन किया,,परन्तु उसने ताज के बनने का कोई भी सन्दर्भ नही प्रस्तुत किया,जबकि भ्रांतियों मे यह कहा जाता है कि ताज का निर्माण कार्य 1631 से 1651 तक जोर शोर से चल रहा था..... **प्रस्तुति- निगमेंद्र सिसोदिया**

पृष्ठ संख्या- 5

Scanned by CamScanner

=>शाहजहाँ के दरबारी लेखक "मुल्ला अब्दुल हमीद लाहौरी "ने अपने "बादशाहनामा" में मुग़ल शासक बादशाह का सम्पूर्ण वृतांत 1000 से ज़्यादा पृष्ठों मे लिखा है,,जिसके खंड एक के पृष्ठ 402 और 403 पर इस बात का उल्लेख है कि, शाहजहाँ की बेगम मुमताज-उल-ज़मानी जिसे मृत्यु के बाद, बुरहानपुर मध्य प्रदेश में अस्थाई तौर पर दफना दिया गया था और इसके ०६ माह बाद,तारीख़ 15 ज़मदी-उल- अउवल दिन शुक्रवार,को अकबराबाद आगरा लाया गया फ़िर उसे महाराजा जयसिंह से लिए गए,आगरा में स्थित एक असाधारण रूप से सुंदर और शानदार भवन (इमारते आलीशान) मे पुनः दफनाया गया,लाहौरी के अनुसार राजा जयसिंह अपने पुरखों कि इस आली मंजिल से बेहद प्यार करते थे ,पर बादशाह के दबाव मे वह इसे देने के लिए तैयार हो गए थे.

पृ.सं.-2

इस बात कि पुष्टि के लिए यहाँ ये बताना अत्यन्त आवश्यक है कि जयपुर के पूर्व महाराज के गुप्त संग्रह में वे दोनो आदेश अभी तक रक्खे हुए हैं जो शाहजहाँ द्वारा ताज भवन समर्पित करने के लिए राजा जयसिंह को दिए गए थे.....

पृष्ठ संख्या- 2

Scanned by CamScanner